'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 | अंक 23 | 19 फरवरी, 2019 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'संघ राजपूतों के लिए नहीं, राजपूत बनाने का मार्ग है'

संघ चाहता है कि आप जीवन में शिविर की तरह प्रसन्नता पूर्वक जीएं। जहां भी रहें प्रसन्नता का प्रसारण करें। लोग हमें संकुचित कह सकते हैं लेकिन उनसे अप्रभावित रहते हुए अपने पारिवारिक भाव का विस्तार करें क्यों कि **संघ राजपूतों के लिए नहीं बल्कि राजपूत बनाने का काम है** और राजपूत वही होता है जो सबके लिए जीता है। संघ आपको नहीं आपकी संतान को बनाना चाहता है और उसके लिए आपका जीवन संयमित एवं जागरुकता भरा होना आवश्यक है। इसी जागरुकता को जगाने के लिए दंपित्त शिविरों का महत्व है। आपके द्वारा बरती जाने वाली नानाविध सावधानियां या लापरवाही आपकी संतान के जीवन के निर्माण में महत्वपूर्ण कारक हैं और संघ की नजर उन पर है इसलिए आपको यह प्रशिक्षण दिया जा रहा है, अभ्यास करवाया जा रहा है, बताया जा रहा है। आवश्यकता है कि आप संघ में आकर अपना विस्तार करें, कहीं रुके नहीं। सपूत वह है जो अपने पिता से जितना पाए उसे सवाया करे, आपने भी संघ से जितना पाया, उसे सवाया कर आगे प्रसारित करें।

बाड़मेर स्थित भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट द्वारा संचालित आलोक आश्रम में 2 से 4 फरवरी तक संपन्न दंपत्ति शिविर के विभिन्न कार्यक्रमों में माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपरोक्त बातें कही। 2 फरवरी को प्रातः 8 बजे से 4 फरवरी को अपराह्न 2.00 बजे तक चले इस शिविर में माननीय संघ प्रमुख श्री ने गृहस्थ का अर्थ, दांपत्य जीवन का महत्त्व, नारी एवं नर की महत्ता, संतानोत्पत्ति एवं उसके लालन पालन बाबत भारतीय शास्त्रीय मत, महापुरुषों के कथन एवं पाश्चात्य दार्शनिकों के मत को बताया। साथ ही नानाविध सावधानियों की चर्चा की। 4 फरवरी को शिविरार्थियों को विदा करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हम तनसिंह जी की बातें करते हैं, वे हमारे आदर्श हैं लेकिन सब हम तनसिंह जी बन जाएं यह संभव नहीं तनसिंहत्व तो हमारे में आ सकता है। तनसिंह जी के जीवन की कहानी ऊंचाई से नीचे आने की है, ऊंचाई से नीचे आकर उन्होंने हमारा हाथ पकड़ा, हमारे कल्याण के लिए और हमें एक व्यवस्था दी संघ के रूप में। मेरी अनुभूति यही है कि वे कहीं गए नहीं है, हमको देख रहे हैं। संघ प्रमुख श्री ने एक फिल्म के गाने का उल्लेख करते हुए कहा कि 'यह जिंदगी उसी की है जो किसी का हो गया।' जो किसी का नहीं हुआ है उसका कोई जीवन नहीं है। हम यहां तनसिंह जी के बनने आए हैं। जिसे तनसिंह जी ने अपनाया उसे मैंने अपने जीवन में महत्व दिया। ऐसे सभी लोगों की राह देखता रहता हूं, हर आहट पर इंतजार करता रहता हूं। मैं जब तक जीवित हूं आपके बीच रहना चाहता हूं। आप सबके अलावा मेरा कोई धन नहीं है। आप सब काम करो, जीवन के सभी व्यवहार निभाओ लेकिन संघ आपको क्यों चाहता है, आप क्यों जुड़े, यह सदैव याद रखो। जो पीड़ा जगी है वह सो नहीं जाए। विदाई के समय भावुक हुए शिविरार्थियों से संघ प्रमुख श्री ने कहा कि रो कर रुक मत जाना, करना शुरू करें। अपनी कमजोरियों के प्रति खार पैदा करें, कर्मठता पैदा करें। आपकी स्मृति संघ का प्राण है उसके कारण वह आपके बीच आता-जाता रहता है। मेरे पर संघ की बहुत कृपा रही। पूज्य तनसिंह जी की बहुत कृपा रही, नारायणसिंह जी की बहुत कृपा रही, मां सा बहुत प्यार पाया और जो मैंने पाया वही आपके बीच बांटता रहता हूं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'महत्व गृहस्थ या विरक्त का नहीं, लगन का है'

आप गृहस्थ आश्रम में हैं या विरक्त में हैं इसका महत्व नहीं है बल्कि आपकी लगन का, निष्ठा का महत्व है। भगवान सबका है। कोई भी, कहीं भी रहकर उसे प्राप्त कर सकता है बस उसके कुछ नियम हैं। जैसे संसार में कुछ बनने के लिए कुछ नियमों का पालन करना पड़ता है उसी प्रकार साधना पथ के भी कुछ नियम हैं, उनका पालन कर कोई भी इन पर बढ़ सकता है। साधना को सिर्फ एक मिनट में बताया जा सकता है लेकिन उसको करने में पूरा जीवन लगता है। संसार में खाने-पीने के कई नियम हैं, अनेक बातें हैं पर साधना पथ में अनेक बातें नहीं हैं। संपूर्ण शास्त्रों व सम्पूर्ण साधना का निचोड़ एक ईश्वर में श्रद्धा, उसके परिचायक नाम 'ॐ' का जप एवं मन सहित इंद्रियों का संयम है। मन सहित इंद्रियों का संयम करना ही पड़ेगा। संत महात्मा केवल मार्ग बताएंगे, करना स्वयं को ही पड़ता है। इस मार्ग में अनेक अवरोध हैं, इन अवरोधों को पार करने का उपाय महात्मा बताते हैं। अकस्मात मन सहित इंद्रियों का संयम नहीं होगा, उसका तरीका श्वास का चिंतन और नाम का जप है। यह धीरे-धीरे अभ्यास से ही संभव है। तटस्थता पूर्वक ईमानदारी से साधना के नियमों का पालन करना ही शौर्य है। साधना में आने वाले अवरोधों को, उतार-चढ़ाव को धैर्यपूर्वक सहन करते हुए नियमित अभ्यास ही शौर्य है। भारत जैसे महान देश ने जब से एक ईश्वर की अपेक्षा अनेक देवी-देवताओं के प्रति निष्ठा जागृत की, विघटन हुआ, देश कमजोर हुआ। अनेक प्रकार की विकृतियां पनपी। हमने मंदिरों का निर्माण किया लेकिन क्या वे हमारी रक्षा कर पाए?

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

कंस वध के बाद भगवान श्रीकृष्ण माता देवकी से मिले। कुछ समय उनके पास रहकर जाने की आज्ञा मांगी तो माता ने कहा कि अभी तो आए और अभी जाने की आज्ञा मांग रहे हो। तब भगवान श्रीकृष्ण का उत्तर था कि जिनको बड़े काम करने होते हैं वे रुका नहीं करते। भगवान श्रीकृष्ण पूरे जीवन भर गतिमान रहे। कोई भी अवरोध उन्हें रोक नहीं पाया। ऐसा ही जीवन हर महापुरुष का होता है। हर महापुरुष अपने जीवन का एक लक्ष्य लेकर आते हैं और जीवन पर्यन्त उस लक्ष्य के लिए कर्मरत रहते हैं। उनके जीवन के समस्त व्यापार उस लक्ष्य के ईर्द-गिर्द ही घूमते रहते हैं। पूज्य तनसिंह जी का जीवन भी ऐसा ही जीवन था। उन्होंने अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाया और जीवन पर्यन्त उनके जीवन के समस्त व्यवहार उस लक्ष्य को केन्द्र में बनाकर रहे। ऐसा ही एक वार्तालाप उनके इस जीवन के इस सत्य का उद्घाटित करता है। संघ की स्थापना के प्रारम्भ के दिनों में वे लगातार संघ कार्य में रत रहते थे। सोते, बैठते, खाते-पीते हरदम संघ चिंतन चलता रहता था। किसी भी क्षण मेरा चिंतन इस लक्ष्य से विरत न हो जाए इसके लिए नानाविध सावधानी रखते थे। शिविरों में 24 घंटे ध्वज के सम्मान में पहरा होता है। प्रति घंटे बारी-बारी से पहरेदार बदलते रहते हैं। उन दिनों उनका विशेष निर्देश था कि पहरे पर जाने वाला हर व्यक्ति उन्हें जगाकर जाएगा। वे उठते, कुछ समय चिंतन करते और फिर विश्राम करते। यह सिलसिला हर घंटे जारी रहता। कालांतर में वे स्वयं उठकर बैठ जाते और चिंतन जारी रहता, कुछ लिखते, कुछ विचार करते। एक बार एक शिविर में रात्रि के दो बजे एक पहरेदार ने उनको जागकर बैठे देखा तो जाकर पूछ लिया कि अभी तो जागरण में 2 घंटे का समय शेष है। आप सोये नहीं, इतनी जल्दी कैसे जाग गए। तब उनका जवाब हम सबके लिए प्रेरणादायी है। उनका कहना था कि जिनको अन्यों को जगाना होता है वह सो नहीं सकता। उनका यह कहना केवल कहना मात्र ही नहीं था बल्कि यही उनके जीवन की कहानी थी। क्योंकि उन्हें सोये समाज को जगाना था इसलिए स्वयं सदैव जागृत रहे। उनकी यह स्थिति उनके लेखों व गीतों में यत्र-तत्र प्रकट होती रही। उन्होंने एक गीता में लिखा है -

'सोये मिलेंगे कदाचित ये सारे
कोई जो, मांगे तो जगता रहूंगा सिरहाने।'

जब भी, जिसने भी अपनी निद्रा को त्यागने के लिए उनसे सहयोग मांगा वे सदैव उसके लिए जागृत स्वरूप में उपलब्ध रहे।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... **- अभयसिंह रोडला**

विगत अंकों में हमने गणित, जीव विज्ञान तथा कृषि-विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों हेतु 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् उपलब्ध विकल्पों की जानकारी प्राप्त की। इसी क्रम में अब हम वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों हेतु 12वीं के पश्चात् उपलब्ध विकल्पों की जानकारी प्राप्त करेंगे। इसके अन्तर्गत दो प्रकार के कोर्स उपलब्ध हैं - डिग्री कोर्सेज तथा सर्टिफिकेशन कोर्सेज।

डिग्री कोर्सेज : वाणिज्य वर्ग से 12वीं उत्तीर्ण करने के पश्चात् निम्नलिखित डिग्री कोर्स में प्रवेश लिया जा सकता है :

(i) बी.कॉम. (बैचलर इन कॉमर्स) (ii) बी.कॉम (ऑनर्स)
(iii) बी.एस.सी. फाईनेन्स (Bachelor in Science with Specialisation in Finance) (iv) बी.बी.ए. फाईनेन्स
(v) बी.एफ.ए. (बैचलर इन फाइनेन्शियल अकाउंटिंग)
(vi) बी.कॉम. प्रोफेशनल

सर्टिफिकेशन (Cirtification) कोर्सेज : वाणिज्य वर्ग के छात्रों हेतु अनेक प्रकार के सर्टिफिकेशन कोर्स उपलब्ध हैं, जिनमें से मुख्य इस प्रकार हैं :

(i) सी.ए. (Chartered Accountant)
(ii) सी.एस. (Company Secretary)
(iii) सी.डब्ल्यू.ए. (Cost and Works Accountant)
(iv) सी.एफ.ए. (Certified Finance Analyst)
(v) सी.एफ.पी. (Certified Finance Planner)
(vi) सी.आई.बी. (Certified Investment Banker)
(vii) सी.एस.बी. (Certified Stock Broker)
(viii) सी.आई.ए. (Certified Investment Analyst)
(ix) सर्टिफाईड एक्चुरीज (Certified Actuary)
(x) एन.एस.ई. सर्टिफिकेशन
(xi) बी.एस.ई. सर्टिफिकेशन

आगामी अंकों में उपरोक्त में से कुछ सर्टिफिकेशन कोर्सेज की विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे। **क्रमशः**

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

मरू भागीरथी (गंगनहर)

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

1887 ई. में केवल सात वर्ष की आयु में गंगासिंह बीकानेर रियासत के 21वें महाराजा बने। उनके शासन काल के प्रारम्भ में 1898 में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। महाराजा ने अपनी रियासत का भ्रमण करते हुए तब अन्न व जल की भयानक त्रासदी को अपनी आंखों से देखा अहसास किया। आगे अकाल की ऐसी स्थिति से निपटने के लिए सतलज नदी से नहर द्वारा पानी को बीकानेर लाने की योजना पर अमल करना प्रारम्भ किया ताकि रेतीले भू-भाग में चारे एवं अनाज की समस्या से निपटा जा सके।

4 सितम्बर 1920 को पंजाब, बहावलपुर (अब पाकिस्तान में) एवं बीकानेर शासकों के मध्य नहर बनाने का समझौता हुआ। जिसमें 80 मील लम्बी कंक्रीट की नहर एवं उसके किनारे 157 मील लम्बी रेलवे लाइन बिछानी थी। जिसकी अनुमानित लागत लगभग 5.50 करोड़ रुपए आनी थी जो तब के समय में बहुत अधिक थी। 5 दिसम्बर 1925 को फिरोजपुर (पंजाब) में नहर के प्रारम्भ होने के शीर्ष स्थान पर महाराजा गंगासिंह ने शिलान्यास किया। बीकानेर सीमा पर स्थित शिवपुर से प्रारम्भ कर सहायक नहरों सहित इसकी कुल लम्बाई 600 मील थी जिसमें 65000 एकड़ भूमि सिंचित होनी थी। नहर का समस्त व्यय बीकानेर सरकार ने वहन किया। आश्चर्य की बात यह कि दो वर्ष में ही 1925 में प्रारम्भ होकर 1927 में नहर पूर्ण हो गई। बीकानेर के व्यापारी एवं साहूकार जो कलकत्ता अथवा मद्रास में व्यवसाय करते थे उन्होंने ऋण के रूप में वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई थी, जिसे अल्प समय में ही महाराजा द्वारा ब्याज के साथ चुकता कर दिया गया।

26 अक्टूबर 1927 को भारत के वायसराय लार्ड इर्विन ने वर्तमान गंगानगर की जगह उद्घाटन किया तथा नहर का नाम गंगनहर (गंग केनाल) एवं नए बसने वाले कस्बे का नाम श्रीगंगानगर रखा। बीकानेर राज्य के इतिहास में यह दिन भव्य उत्सव के रूप में मनाया गया। वर्तमान जिला मुख्यालय गंगानगर एक निर्जन एवं सूखा स्थान था जो शाही तम्बुओं के रूप में छोटे शहर की तरह आबाद हो गया। हजारों लब्ध प्रतिष्ठित मेहमान यथा भारत की अन्य रियासतों के राजा, महाराजा, गर्वनर, अधिकारी, जागीरदार वर्ग यहां उद्घाटन की रस्म में आमंत्रित थे। बीकानेर के राठौड़ भाइपा की रियासतों के महाराजाओं को विशेष आमंत्रण था। अतिथियों को लाने-ले जाने के लिए बीकानेर से गंगानगर तक विशेष रेल गाड़ी चलाई गई। नहर के उद्घाटन के पश्चात् वायसराय एवं अतिथियों के लिए भव्य महाभोज का आयोजन किया गया। महाराजा गंगासिंह, उनके पुत्र महाराज कुमार सार्दुलसिंह एवं पौत्र भंवर युवराज कुमार करणीसिंह के रूप में यहां बीकानेर राज परिवार की तीन पीढ़ियां उपस्थित थी। गंग कैनाल में पानी छोड़े जाने के उपरान्त महाराजा ने अपने राज्य में समृद्धि लाने के लिए ठीक उसी तरह से हल जोता, जिस प्रकार रामायण काल में सीता के पिता राजा जनक ने किया था। महाराजा ने हल को खींचा एवं महारानी ने हल के पीछे चलते हुए सच्चे मोतीयों को अनाज के रूप में बोया। यह हल आज भी सार्दुल म्युजियम बीकानेर में प्रदर्शित है। इंगलैण्ड के सम्राट जार्ज पंचम ने तार भेजकर महाराजा के भागीरथी प्रयास की भूरी-भूरी प्रशंसा की। यह वह प्रदेश था जहां सैकड़ों वर्षों से जन मानस को पता नहीं था कि बहता हुआ पानी क्या होता है? निर्जन एवं शुष्क प्रदेश पानी की उपलब्धता पाकर आबाद हो गया। लाखों घर-परिवारों का जीवन स्तर ही बदल गया। महाराजा द्वारा अनेकों स्थानों से लाकर यहां कृषि कार्य करने वाली जातियों को बसाया गया। जो कृषि कार्य में मेहनती थी। कृतज्ञ लोग आज भी महाराजा को श्रद्धा एवं सम्मान के साथ याद करते हैं। गंगानगर में लगी उनकी अश्वारुढ प्रतिमा को प्रतिदिन लोग पुष्प चढ़ाकर नमन करते हैं। कहते हैं कि गंगनहर की प्रगति की उन्हें हर समय चिन्ता रहती थी, मुम्बई में 1943 में मृत्यु शैय्या पर भी अन्तिम बात की थी 'मुझे भाबड़ा बांध परियोजना की फाइल दो।'

प्राचीन हिन्दू परम्परा में राजा भागीरथ ने कठोर तप से गंगा को धरती पर अवतरित किया था। बीकानेर की प्रजा भी महाराजा को भागीरथ सा सम्मान देती है। तपती धरती पर हजारों मील से हिमालय का जल रेगिस्तान के खेतों में लाकर महाराजा ने अपने जीवन में इसे हरा-भर होते देख लिया था। वे गंगानहर लाकर आधुनिक भागीरथ कहलाए।

टीके को अस्वीकार किया

भगवानसिंह जाखली के पुत्र हिम्मतसिंह का विवाह 8 फरवरी को भगतपुरा (सीकर) निवासी दिलीपसिंह की पुत्री से हुआ। विवाह में दुल्हे ने 1.50 लाख रुपए टीके के अस्वीकार कर केवल एक रुपया व नारियल लेकर अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया। दूल्हा संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक हरिसिंह जाखली का पौत्र है।

'सभी में संघ हैं, सभी में संघ रहेगा'

संघ आप सभी में है और सभी में रहेगा। किसी में जागृत अवस्था में तो किसी में सुप्त अवस्था में। संघ आप में नहीं है ऐसा मैं नहीं मानता इसलिए आप सभी से मिलने की उत्सुक रहता हूं। भारतीय ग्राम्य आलोकायान ट्रस्ट के आलोक आश्रम में बाड़मेर जिले के स्वयंसेवकों के दो दिवसीय मिलन शिविर को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपरोक्त बात कही। 9 व 10 फरवरी को आयोजित इस शिविर में स्वयंसेवकों से चर्चा करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि भगवान ने हर व्यक्ति का स्वभाव, बुद्धि, श्रद्धा अलग-अलग बनाई है। कोई बुरा नहीं है कोई अच्छा नहीं है। भगवान ही बूरे हैं और भगवान ही अच्छे हैं इसलिए किसी को भी दुष्ट या बुरा बताने से पहले अपने आपको देखें। किसी भी प्रकार की संकुचितता या हीन भावना नहीं रखें बल्कि सत्संग करें। सत को पाकर जो सत हो गया या संघ को पाकर संघ ही हो गया है, जिसमें अनन्य भाव आ गया है उसका संग करें, यही सत्संग है। आनंद का यही मार्ग है। यदि आप इस मार्ग पर आएंगे तो आप में दरिद्रता नहीं रहेगी और दरिद्रता नहीं रहेगी तो कष्ट भी नहीं रहेंगे। हमारी सोच की दरिद्रता ही कष्ट ढूंढ़ती है। दुःखी करती है। संसार की विभिन्नताएं भगवान ने बनाई हैं और इन्हें भगवान भी मिटा नहीं सकते। ये सृष्टि जब तक है विभिन्नताएं रहेंगी। फिर भी भगवान जब भी आए इन्हें न्यूनतम करने का प्रयास किया और भगवान का ही यह संदेश है कि जो मैंने किया वही तुम करो। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि संघ की सेवा के बिना संघ को नहीं पा सकते और हम सेवा उसी की करते हैं जिसके प्रति लगाव होता है। आप जहां भी रहें, जैसे भी रहें, गतिहीन न होवें, कदमताल न करें। यदि गतिशील रहेंगे तो संघ का सदैव सत्संग मिलेगा और आप संघमय बने रहेंगे।

8 फरवरी को चौहटन के भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस में प्रांतीय स्नेहमिलन में सभी स्वयंसेवकों ने संघ प्रमुख श्री का सानिध्य पाया। छात्रावास के विद्यार्थियों को संघ प्रमुख श्री ने अध्ययन के साथ जीवन के सभी आयामों में आगे रहने को प्रेरित किया। प्रबंध समिति को उच्च कोटि के शिक्षकों से अतिरिक्त शिक्षण करवाने का निर्देश दिया। विरात्रा माता मंदिर में उपस्थित स्वयंसेवकों एवं प्रबंध समिति के सदस्यों से चर्चा करते हुए संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हमारा शरीर भगवान द्वारा निर्मित मंदिर है, उसी में परमेश्वर का वास है। समस्त समस्याओं का समाधान सत्संग व आदर्श पुरुषों का सानिध्य बताते हुए पूज्य तनसिंह जी के जीवन के अनेक संस्मरण सुनाए।

चौहटन एवं बाड़मेर के स्वयंसेवकों से मिलकर 10 फरवरी को माननीय संघ प्रमुख श्री जैसलमेर पधारे। 10 फरवरी को पोकरण एवं जैसलमेर संभाग के स्वयंसेवकों का स्नेहमिलन रखा गया। स्नेहमिलन में हुई चर्चा में संघ प्रमुख श्री ने कहा कि संघ ने अपने अरमानों को आपके भीतर संजोया है, आशाएं रखी हैं, बाहें फैलाकर आपको अपना बनाया है इसीलिए आप सबसे लगाव है। संघ आपको अपना मानता है और अपनों का स्मरण एवं अपनों से मिलने की चाह सदा बनी रहती है। आप भी अपने जीवन व्यवहार के सभी आयामों को छूते हुए सदैव संघ का स्मरण रखें। जीवन में अपनी आवश्यकताओं के पीछे की भागदौड़ में उस परम शक्ति को सदैव याद रखें जिसने इस जीवन में यह सुंदरता दी है। हमें जो मिल रहा है, सब उसी की देन है, इस कृतज्ञता को बनाए रखें।

प्रातःकालीन शाखा में संघ प्रमुख श्री ने कहा कि संघ आपको जिम्मेदार मानकर आगे बढ़ाना चाहता है और आप अपना बचपना छोड़े बिना कदमताल ही कर रहे हैं। कदमताल गति नहीं होती बल्कि गति का भ्रम है। बचपना छोड़कर गंभीर बने बिना गति नहीं बढ़ सकती। ऐसा किए बिना यात्रा प्रारम्भ ही नहीं होगी। परिपक्वता की ओर बढ़ने के लिए गतिमान होवें। 11 फरवरी को प्रातः 11 बजे शिविरों में आने वाली बालिकाएं एवं स्वयंसेवकों के परिवार की महिलाएं संघ प्रमुख श्री से मिलने पहुंची। दोपहर के भोजन तक उन्होंने संघ प्रमुख श्री का सानिध्य पाया एवं अपराह्न भोजन कार्यालय में ही किया। अपराह्न पश्चात स्वामी प्रतापपुरी, पूर्व विधायक सांगसिंह भाटी, छोटूसिंह भाटी, जालमसिंह रावलोत आदि संघ प्रमुख श्री से मिलने पहुंचे एवं राजनीतिक व सामाजिक चर्चा की। रात्रि को अनौपचारिक बातचीत में स्थानीय स्वयंसेवकों को अपने संघ जीवन के बारे में बताया। अन्य वरिष्ठ स्वयंसेवकों ने भी अपने संघ जीवन के अनुभव सुनाए। जैसलमेर में चल रहे संघ कार्य की समीक्षा की व इसे और बेहतर बनाने के लिए मार्गदर्शन दिया। 12 फरवरी को प्रातः अल्पाहार के पश्चात बाड़मेर के लिए प्रस्थान किया।

तकनीक से तरक्की की कहानी 'काऊ बेल्स'

पशुपालन कृषि के साथ जुड़ा हुआ परंपरागत व्यवसाय है। हम परम्परागत रूप से कृषक रहे हैं इसलिए पशुपालन से भी जुड़े रहे। कृषि और पशुपालन व्यवसाय ऐसा व्यवसाय है जिससे उत्पादक, श्रमिक या उपभोक्ता के रूप में हमारा सभी वर्गों से संबंध रहता है, समाज का बड़ा वर्ग व्यवसायिक रूप से हमारे से जुड़ा रहता है। कालांतर में आधुनिकता की दौड़ एवं तकनीकी रूप से अद्यतन न होने के कारण लाभदायक न रहने से हम इस व्यवसाय से दूर होते गए। लेकिन यदि व्यवसायिक दृष्टिकोण से उपलब्ध तकनीक का समुचित प्रयोग करते हुए आज भी हम इस व्यवसाय को अपनाएं तो इसमें सफलता की बहुत संभावनाएं हैं। इसी का उदाहरण है बीकानेर में नवीनसिंह भवाद द्वारा विकसित किया गया 'काऊ बेल्स' डेयरी फार्म। आपने 2012 में दस गायों से यह व्यवसाय प्रारम्भ किया जो आज लगभग 200 गायों तक पहुंच गया है। बीकानेर शहर के 700 परिवार स्वच्छ एवं स्वास्थ्यवर्धक दुध के लिए आपके द्वारा विकसित किए गए ब्रांड 'काऊ बेल्स' पर निर्भर है। आपने काम शुरू करने से पूर्व पंजाब एवं हरियाणा की बड़ी किसान डेयरियों का अवलोकन किया। लागत कम करने व हैण्ड्स फ्री दूध के लिए मिल्किंग मशीन खरीदी। बल्क मिल्क कूलर एवं पैकेजिंग मशीन लगाई। सोशल मीडिया सहित सम्पर्क के सभी साधनों द्वारा उपभोक्ताओं तक सीधी पहुंच बनाई और आज उत्पादन से लेकर वितरण तक का सभी काम स्वयं की निगरानी में करते है। प्रतिदिन 1500 लीटर दूध की सप्लाई बीकानेर शहर में करते हैं। स्वयं की 40 बीघा जमीन है जिसमें पशुओं के लिए ओर्गेनिक चारा उगाते हैं और वही खिलाते हैं। इसके अतिरिक्त गायों की आवश्यकतानुसार उन्हें पोष्टिक आहार दिया जाता है। गायों की देखभाल के लिए परम्परागत नुस्खों के साथ-साथ आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। गाय ऐसा पशु है जिसे जो कुछ खिलाते हैं उसका असर उसके दूध के स्वाद, महक एवं गुणों में आ जाता है इसलिए गायों के पोषण पर विशेष ध्यान रखा जाता है। नवीनसिंह ने इस डेयरी फार्म का प्रारम्भ 10 गायों से किया था फिर नेशनल डेयरी डवलपमेंट बोर्ड, साबरमती (गुजरात) से उच्च गुणवत्ता युक्त सीमन खरीदा एवं अपनी ही डेयरी में पशु संतति को बढ़ाया। आज इनके पास लगभग 200 पशु है। नवीनसिंह का कहना है कि जब वे प्रारम्भ में किसी डेयरी में अवलोकनार्थ गए तो एक संचालक ने उन्हें बताया कि यदि 10 गाय पाल रहे हो तो 11 खूंटे बनाना। 10 में गायों को बांधना एवं 1 से स्वयं बंधे रहना तब ही सफल हो पाओगे। उन्होंने इस सीख का पालन किया और आज एक सफल दुग्ध व्यवसायी बन गए हैं। हमारे समाज के अनेक लोग परम्परागत रूप से पशुपालन व्यवसाय से जुड़े हुए हैं यदि वे आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल कर व्यावसायिक दृष्टिकोण से इस क्षेत्र को अपनी जीविकोपार्जन का साधन बनाएं तो स्वयं के साथ-साथ अनेक लोगों को रोजगार उपलब्ध करवा सकते हैं। इस बारे में और अधिक जानकारी चाहिए तो नवीनसिंह भवाद से 98292-17401 पर सम्पर्क कर ले सकते हैं।

संपादकीय

भूत-भविष्य और वर्तमान

हमारे समाज की जब भी कोई बैठक होती है या किसी भी प्रकार की सामाजिक चर्चा होती है तो भूत और भविष्य की जरूर चर्चा होती है। कुछ लोग होते हैं जिन्हें अतीत में जीना पसंद होता है वे सदैव अतीत की चर्चा करते रहते हैं। अतीत से बड़ा कोई शिक्षक नहीं होता। इसलिए सीखने के लिए या सबक लेने के लिए अतीत की चर्चा अवश्य ही होनी चाहिए लेकिन उस चर्चा का हेतु किसी प्रकार की सीख लेने से अधिक केवल गुणगान करना हो तो वह कृतज्ञता ज्ञापन से अधिक कुछ नहीं होता। निश्चित रूप से कृतज्ञता ज्ञापन श्रेष्ठतम गुणों में से एक है लेकिन कृतज्ञता ज्ञापित कर उन विशेषताओं का अनुकरण करना जिनके कारण कृतज्ञता ज्ञापित की जा रही है, कहीं अधिक श्रेष्ठ है। इसलिए केवल अतीत की चर्चा करते रहना, अतीत के गुणगान करना, उसे श्रेष्ठ बताकर वर्तमान को नेष्ठ सिद्ध करना मात्र ही करणीय नहीं है। इतना सब होते हुए भी हमारे समाज का बहुत बड़ा वर्ग केवल अतीत का गुणगान कर संतोष कर लेता है। सामाजिक चर्चाओं में दूसरी प्रकार के लोग वे होते हैं जो भविष्य की चिंता में पीले पड़े नजर आते हैं। ऐसे लोग प्रायः कल्पनाओं के संसार में खोये रहते हैं। इनके पास हर प्रकार की समस्या के लिए सुझाव होते हैं, योजना होती है। बस चर्चा का सूत्र इनके साथ में आने भर की आवश्यकता होती है, फिर तो ये उस चर्चा को अंजाम देने के लिए उम्दा से उम्दा योजना या उम्दा से उम्दा सुझाव पेश कर देते हैं। इन सुझावों और योजनाओं का भी कम महत्त्व नहीं है। ऐसे सुझाव एवं योजनाएं ही समस्या के समाधान का मार्ग खोजते हैं लेकिन केवल सुझाव देकर या योजना बताकर स्वयं को उससे अलग कर लेना इनका स्वभाव होता है और ऐसे स्वभाव के कारण ही इनके सुझाव या योजनाएं अनुकरणीय नहीं हो पाती। एक अन्य प्रकार के लोग भी होते हैं जो वर्तमान में जीते हैं। वे भूत और भविष्य को पूरा सम्मान देते हैं लेकिन यह अच्छी तरह जानते हैं कि ना तो भूत अब हमारे हाथ में रह गया है और ना ही भविष्य अभी हमारे हाथ में आया है। अभी हम जो कर सकते हैं, जिसका उपयोग कर सकते हैं वह तो वर्तमान ही है। हमारे इस वर्तमान का श्रेष्ठतम उपयोग ही हमारे भविष्य को उज्ज्वल बनाएगा एवं आने वाले समय के भूत को भी गौरवमयी बना पाएगा। ऐसे लोग केवल इतिहास का गुणगान कर ही शांत नहीं बैठते। केवल इतिहास के गौरवमयी क्षणों पर ही नहीं इतराते बल्कि उस गौरवमयी इतिहास को वर्तमान बनाने में अपनी उपलब्ध क्षमताओं की आहूति देकर अपना कर्तव्य निभाते हैं। वर्तमान को लेकर संजीदा लोग केवल भविष्य की योजना बनाकर इतिश्री नहीं कर लेते। वे किसी समस्या के कारण और निवारण पर चर्चा कर संतोष नहीं कर लेते बल्कि उन कारणों के निवारण में स्वयं की क्षमताओं का क्या उपयोग कर सकते हैं, वह करके ही संतोष करते हैं। इसलिए ऐसे लोग ना ही तो भूतकाल की बातें कर आहें भरते हैं और ना ही भविष्य की चिंता में पीले पड़ते हैं बल्कि गौरवशाली अतीत की परम्परा के निर्वहन में अपनी भूमिका निभाकर उज्ज्वल भविष्य की नींव रखा करते हैं। ऐसे लोग परिणाम को लेकर इतने अधिक चिंतित भी नहीं होते बल्कि अपना पूरा ध्यान इस बात पर केन्द्रित करते हैं कि परिणाम को बेहतर बनाने में उनका क्या योगदान हो सकता है। वे इस बात की चिंता भी नहीं करते कि इतनी बड़ी समस्या में उनके छोटे से प्रयास से क्या असर पड़ेगा क्योंकि उनका लक्ष्य किसी असर का आकलन करना नहीं होता बल्कि उनका लक्ष्य वे स्वयं क्या कर सकते हैं उस पर होता है और इसलिए वे अपने वर्तमान को जाया किए बिना जो कर सकते हैं, करना प्रारम्भ कर देते हैं। शेष लोग भूत और भविष्य में खोये रहते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ वर्तमान के समुचित सदुपयोग ही प्रयास है। पूज्य तनसिंह जी को इस समाज के अतीत से गहरा प्रेम था, उनके लिए वह प्रेरणा का स्रोत था लेकिन वे इसके गुणगान तक सीमित नहीं रहे बल्कि उनके अपने वर्तमान का उस अतीत के गौरव को हासिल करने के लिए कैसे उपयोग कर सकते थे, करना प्रारम्भ कर दिया। साथ ही वे भविष्य की सुंदर कल्पनाओं में खोये नहीं रहे। उन कल्पनाओं को साकार करने के लिए केवल सुझाव देकर अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं कर ली बल्कि उन कल्पनाओं को धरातल पर उतारने के लिए कर्मशील हुए। उन्होंने इस बात की चिंता भी नहीं की कि इन सुन्दर कल्पनाओं को साकार करने में कितनी पीढ़ियां लगेंगी, उन्होंने तो बस यही ध्यान रखा कि वे स्वयं क्या कर सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने स्वयं ही ऐसा नहीं किया बल्कि ऐसा करने वाले लोग तैयार करने का मार्ग प्रशस्त किया जिस पर चलकर लोग परिणाम की चिंता किए बिना अपने वर्तमान का श्रेष्ठतम उपयोग कर सकें। उनका बताया वह मार्ग हमारे गौरवमयी अतीत के अनुरूप उज्ज्वल भविष्य के निर्माण हेतु हमारे वर्तमान के श्रेष्ठ उपयोग के लिए हमारा आह्वान कर रहा है, जो उस आह्वान को स्वीकार करता हो, उसका पलक पांवड़े बिछाकर स्वागतोन्सुक है।

खरी-खरी

'झूंठ की आंच पर कुर्सी की खिचड़ी'

साधन और साध्य का स्वाभाविक संबंध है। जिस साध्य के लिए साधन न हो वह साध्य अव्यवहारिक है और जिन साधनों का कोई साध्य न हो वे, निरर्थक है। अलग-अलग विचारधाराओं ने साध्य और साधन के महत्त्व को अलग-अलग आंका है। कुछ लोगों ने साधन की पवित्रता पर इतना बल दिया कि साध्य से ही विमुख हो गए तो कुछ लोगों ने साध्य को इतना महत्त्व दिया कि उसके लिए 'येन केन प्रकारेण' की अवधारणा विकसित हुई। वास्तव में तो साध्य ही महत्त्वपूर्ण होता है। साधन की तो सार्थकता ही इसी में है कि वह साध्य तक पहुंचा कर निःशेष हो जाए। वास्तव में साधन साध्य के लिए होता है, यदि साधन के लिए साध्य की उपेक्षा की जाए तो उसे व्यवहारिक नहीं माना जा सकता। जैसे आजीविका कमाना जीवन निर्वाह का साधन है और जीवन धर्म की स्थापना का या अटल सत्य परमेश्वर तक ले जाने का साधन है। यदि आचार्य द्रोण की तरह जीवन निर्वाह का साधन आजीविका इतनी महत्त्वपूर्ण हो जाए कि उसके लिए दुर्योधन की भी चाकरी करनी पड़े तो यह जीवन का दुरुपयोग ही है और साध्य की अपेक्षा साधन को अति महत्त्व देना है। दूसरी तरफ भगवान श्री कृष्ण का जीवन है जो जीवन लक्ष्य धर्म स्थापना के लिए किसी भी अवरोध को स्वीकार नहीं करते। वे युद्ध को टालने का पूरा प्रयास करते है, लेकिन जब कोई उपाय शेष नहीं बचता तो पीछे भी नहीं हटते। उस महायुद्ध के नियमों को वे तब तक नहीं तोड़ते तब तक कि सामने वाले उनका पालन कर रहे थे लेकिन सामने वाले पक्ष द्वारा बार-बार नियम तोड़ने के बावजूद भी वे उसी सूरत में नियम भंग करते हैं जब सब उपाय निःशेष हो जाते हैं। वे 10 दिन तक पितामह भीष्म का मुकाबला करने के लिए पांडवों को प्रोत्साहित करते हैं और जब कोई उपाय नहीं रह जाता तब शिखण्डी का उपयोग करते हैं। अभिमन्यु की मृत्यु तक किसी निहत्थे पर वार नहीं किया जाता लेकिन उसके बाद यदि धर्म की विजय में कोई नियम आड़े आता है और उसे तोड़ने के अलावा कोई उपाय शेष नहीं रहता तो उसे बिना किसी ग्लानि के तोड़ भी देते हैं। इस प्रकार उनकी नजर में साध्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है लेकिन साधन की पवित्रता भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है, जब तक वह सत्य की विजय का रोड़ा बन कर खड़ी नहीं होती वे उस पवित्रता को बनाए रखते हैं।

आजादी के आंदोलन में देखें तो गांधीजी का साधन की पवित्रता का अति आग्रह था और कई बार उनका साध्य 'स्वतंत्रता' उनके इस आग्रह के पीछे छिपता सा लगता है। वहीं तिलक आदि नेता आंदोलन के साध्य को अधिक महत्त्व देते लगते हैं। लेकिन आजादी के बाद पनपी व्यवस्था में साधन की पवित्रता लगातार खोती रही। आजादी के तुरंत बाद आई व्यवस्था में उस संघर्ष में तपे कुछ नेताओं ने फिर भी साधन की पवित्रता के आग्रह को बनाए रखा एवं साध्य के महत्त्व को बनाए रखते हुए अपने इस आग्रह को क्रियान्वित भी किया लेकिन विगत वर्षों में तो संघर्ष का प्रारंभ ही अपवित्र साधनों से होने लगा है। भगवान श्रीकृष्ण का उदाहरण देकर अपने अपवित्र साधनों को जायज ठहराने वाले लोग ये भूल जाते हैं कि उन्होंने अंतिम उपाय के रूप में, साध्य का अकाट्य रोड़ा बनने पर ही साधन की पवित्रता के आग्रह को नकारा। लेकिन वर्तमान के भाग्य विधाताओं के संघर्ष का आगाज ही अपवित्रता से होता है। आजादी के आंदोलन के पर्याय के रूप में स्थापित हो चुके गांधीजी के अनुयायी जब झूठ को ही अपना सर्वोपरि अस्त्र बना लेते हैं तो यही कहा जा सकता है कि गांधीजी का नाम रटने वाले लोगों द्वारा गांधीजी के दर्शन का इससे बड़ा बलात्कार क्या हो सकता है। सोशल मीडिया द्वारा जनमानस तक त्वरित गति से आसान पहुंच बनाने वाली विधि आने के बाद तो जैसे झूठ की फैक्ट्रियां खुल गई हैं। मुख्य राजनीतिक दलों ने आई.टी. सेल के नाम से ऐसे उत्पादक तैयार कर दिए हैं जो प्रतिदिन की घटनाओं को झूठ का सहारा लेकर इस प्रकार प्रचारित करते हैं कि अर्थ ही बदल जाता है। सोशल मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया एवं प्रिंट मीडिया के साथ-साथ संचार के नए-नए माध्यमों से इस झूठ को इतना योजनाबद्ध एवं त्वरित गति से फैलाया जाता है कि बेचारा आम आदमी सत्य तक पहुंचने का आग्रह ही त्याग देता है और इस प्रकार वायरल हुए झूठ के भरोसे धारणाएं बना लेता है। देश के भाग्य विधाता बनने या बने रहने का सपना संजोये बड़े-बड़े लोग बहुत ही बेशर्मी से विश्वासपूर्वक इस झूठ का प्रसारण करने में योग देते हैं तब यूं लगता है कि क्या वे उन्हीं गांधी के अनुयायी है जिनके बारे में यह कहा जाता है कि उन्होंने सत्य के लिए जान दे दी। अपने आपको राम और कृष्ण के अनुयायी कहने वाले लोग जब अपनी कुर्सी की खिचड़ी पकाने के लिए किए जाने वाले कुकृत्यों को जायज ठहराने के लिए उनके जीवन के उदाहरण देते है तब यूं लगता है कि किसी भी दर्शन या विचारधारा का इससे बड़ा बलात्कारी भी इस भारत भूमि पर पैदा होना शेष बचा है क्या? अब तो हर घटना पर, हर समाचार पर यह आशंका होने लगी है कि कहीं यह किसी झूठ के फैक्ट्री से पैदा हुआ उत्पाद तो नहीं है जो अपनी कुर्सी की खिचड़ी पकाने के लिए प्रसारित किया गया हो।

महाराजा प्रवीर चन्द्र भंजदेव बस्तर

महाराजा प्रवीर चन्द्र भंजदेव महारानी साहिबा प्रफुल्ला कुमारी देवी (बस्तर) और लाल साहब प्रफुल्ला चन्द्र भंजदेव (मयरभंज) के सुपुत्र थे। आपका जन्म 25 जून 1929 को शिलांग में हुआ था। बचपन में ही माता-पिता के निधन के पश्चात 6 वर्ष की आयु में ब्रिटिश शासन द्वारा उनका राजतिलक कर दिया गया। उनकी शिक्षा रायपुर के राजकुमार महाविद्यालय में संपन्न हुई थी। 18 वर्ष की उम्र होने के उपरान्त और आजादी के कुछ समय पूर्व ही उन्हें बस्तर रियासत की सत्ता सौंपी गई। बस्तर के वे 20वें महाराजा थे। वे बस्तर के अंतिम काकतीय शासक थे। महाराजा प्रवीर चन्द्र भंजदेव का ग्रामीणों से आत्मीय संबंध था तथा आदिवासियों के मसीहा थे जिन्होंने जनजातीय लोगों के कल्याण के लिए ताउम्र संघर्ष किया। आदिवासियों के जल, जंगल, जमीन और प्राकृतिक संसाधनों को हथियाने के लिए उन्हें उजाड़ना कोई नई बात नहीं है। इसकी शुरुआत आजादी के तुरन्त बाद ही हो गई थी। छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में इसका सबसे पहले विरोध आदिवासियों के पक्ष में राजा प्रवीर चन्द्र भंजदेव ने किया था। वे आजादी और रियासतों के विलय को देशहित में मानते थे। नए रंग और देश की आजादी और रियासतों के विलय से बस्तर नरेश बहुत आशान्वित थे। बस्तर के आदिवासी मां दंतेश्वरी देवी और राजा प्रवीर चन्द्र भंजदेव में असीम आस्था रखते हैं। आज भी ग्रामीण मां दंतेश्वरी और भंजदेव की तस्वीरें अपने घरों में सज्जा कर रखते हैं।

बस्तर क्षेत्र में खनिज सम्पदा विशेष रूप से लौह अयस्क के भण्डार होने की जानकारी मिलने पर हैदराबाद निजाम अनेक प्रलोभन देकर बस्तर रियासत को अपने पक्ष में करना चाहते थे लेकिन भंजदेव ने निजाम के ऐसे प्रस्तावों को ठुकरा दिया था। आजाद भारत में आदिवासियों के बेहतर जीवन की कल्पना कर राजा ने 1 जनवरी 1948 को विलय पत्र पर स्वयं हस्ताक्षर कर बस्तर को भारतीय गणराज्य में शामिल कर दिया था। भंजदेव पहले बस्तर और बाद में गोंडवाना और उसके बाद पूरे देश के आदिवासियों को राजनीतिक रूप से जागरूक करने की कोशिश करने लगे। सन् 1957 में विधायक चुने जाने के बाद स्थानीय लोगों की ईमानदारी से सेवा करने लग गए। लेकिन आदिवासियों के प्रति सरकार के रवैये से निराश होकर 1959 में विधानसभा से इस्तीफा दे दिया। रियासत के दौरान कानून बना कि आदिवासी की जमीन गैर आदिवासी नहीं ले सकेगा। परन्तु आजादी के बाद उस कानून में संशोधन कर उसमें नए प्रावधान शामिल कर दिए। नतीजा यह हुआ कि एक बोतल शराब या कुछ पैसों में ही बाहरी लोग आदिवासियों के जंगल और जमीन हड़पने लग गए। साल और सागवान के जंगल उजड़ने लगे। इसे मालिक मकबूजा भ्रष्टाचार काण्ड का नाम दिया गया। राजा ने इस भ्रष्टाचार और संशोधन का व्यापक विरोध किया। आदिवासी विरोधी सरकारी नीतियों के खिलाफ जब पूर्व राजा की सक्रियता बढ़ गई तब फरवरी 1961 में उन्हें कुछ दिनों के लिए हिरासत में भी लिया गया। केन्द्र सरकार ने कार्रवाई आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रपति के एक आदेश के जरिए राजा के रूप में उनकी सभी सुविधाएं समाप्त कर दी।

बस्तर के आदिवासी सरकार के इस कदम से हैरान हो गए और वहां विद्रोह की स्थिति खड़ी हो गई। राजा के समर्थन में व्यापक स्तर पर विरोध प्रदर्शन किया। आदिवासियों में राजा के प्रति लोकप्रियता से चिढ़कर प्रशासन ने आदिवासियों का दमन करने का निश्चय कर लिया। मार्च 1961 में करीब 20 हजार आदिवासियों पर निर्ममता पूर्वक गोलियों की बौछार की गई जिसमें बड़ी संख्या में आदिवासी मारे गए। भंजदेव ने अलग से राजनीतिक राह अपनाने का फैसला कर सन् 1962 में अपने समर्थकों के साथ चुनाव लड़ा और बस्तर की दस विधानसभा सीटों में से 9 पर बड़ी जीत हासिल कर ली। इससे राज्य सरकार परेशान हो गई। जबरन लेवी वसूली, आदिवासी महिलाओं से पुलिस का दुर्व्यवहार, भूखमरी, दण्डकारण्य प्रोजेक्ट इत्यादि पर भंजदेव का सरकार से सामना होता रहा। 25 मार्च 1966 को राजप्रसाद में घुसकर पुलिस ने अनेक आदिवासियों समेत राजा को गोलियों से भून दिया। यह उस समय की घटना है, जब लाल गलियारा नहीं बना था और ना ही नक्सलवाद पनपा। राजा लाल गलियारा और नक्सलवाद दोनों से आदिवासियों को बचाना चाह रहा था। राजा की मौत से सरकार के प्रति आदिवासियों के मन में अविश्वास का जो भाव पैदा हुआ था वह आज भी झलकता है। तब से लेकर आज तक बस्तर जल रहा है। वहां की समस्याएं निरन्तर विकराल रूप लेती जा रही हैं। प्रवीरचन्द्र भंजदेव एक ऐसा राजा था जिसने कभी राज नहीं किया, लेकिन सदैव अपने लोगों को जेहन में राजा के रूप में छाया रहा।

– कर्नल हिम्मतसिंह पीह

सादगीपूर्ण सगाई

7 फरवरी को भैरुसिंह सेतरावा के पुत्र की सगाई दीपसिंह रणधा की पुत्री के साथ बिना किसी प्रदर्शन के सादगी पूर्ण ढंग से संपन्न हुई। इस अवसर पर उपस्थित समाजबंधुओं ने इस प्रयास की सराहना की।

शाखा के मैदान से

गुजरात के भावनगर स्थित मनहर कुंवर बा राजपूत छात्रालय की साप्ताहिक शाखा का दिनांक 10 फरवरी 2019 का छायाचित्र।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha,
Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

परमवीर डिफेन्स एकेडमी
सैन्य सेवाओं को समर्पित संस्थान
आर्मी

नेवी
एयरफोर्स SSC-GD NDA/CDS
भाटी भवन, महिला पुलिस थाने के सामने, रातानाडा
जोधपुर 9166119493

अलख नयन मंदिर
नेत्र संस्थान

रजि. केन्द्र
मुख्य केन्द्र

आंखों से सम्बन्धित रोगों के निदान का विश्वसनीय केन्द्र
• केटरेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जरी • कान्टेक्ट लेंस क्लिनिक
• रेटिना • कॉर्निया
• ग्लूकोमा • अल्प दृष्टि उपकरण • बाल नेत्र चिकित्सा
• भेंगापन • आई बैंक व प्रत्यारोपण केन्द्र
सुपर स्पेशिलाइज एवं अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ
डॉ. एल.एस. झाला | डॉ. विनीत आर्य | डॉ. शिवानी चौहान
डॉ. साकेत आर्य | डॉ. नितिश खतुरिया | डॉ. गर्व बिश्नाई
• शिक्षण (PG Ophthalmology) व (Hands-on) प्रशिक्षण संस्थान
• निःशुल्क अति विशिष्ट नेत्र चिकित्सा (जरूरतमंद रोगियों के लिए फ्री आई केयर)

33वीं राजस्थान इतिहास कांग्रेस में प्रस्तुत शोध-पत्र

तनेसिंह सोढ़ा, जैसलमेर

धाट का प्रथम स्वतंत्रता सेनानी राणा रतनसिंह सोढ़ा

विभिन्न ऐतिहासिक संदर्भों के आधार पर धाट क्षेत्र को निम्न भौतिक क्षेत्रों में परिभाषित किया गया है। यथा- भारत विभाजन के दरम्यान इस क्षेत्र का लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा पाकिस्तान में और 30 प्रतिशत हिस्सा हिन्दुस्तान में रह गया, जो कि धाट क्षेत्र कहलाया, पूर्व-पश्चिम में अमरकोट से लेकर चौहटन की पहाड़ियों तक और उत्तर-दक्षिण में जैसलमेर के सता-सुन्दरा गांव से लेकर बाड़मेर जिले के सेडवा कस्बे तक और पाकिस्तान में सती डेहरा का क्षेत्र धाट कहलाया है। धाट प्रदेश थार मरु का हिस्सा है। लम्बा चौड़ा सफेद रेगिस्तान होने के कारण इसे 'धोळी धाट' भी कहा जाता है। उक्त संदर्भों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राजस्थान की पश्चिम सीमा पर मारवाड़ और सिन्ध के मध्य स्थित रेगिस्तानी भू-क्षेत्र धाट कहलाता है। सिन्धु सभ्यता एवं वैदिक संस्कृति का उद्गम स्थल यही क्षेत्र है। सनातन संस्कृति की सरिता सर्वप्रथम धाट की धवल धरती से प्रवाहित होकर माड़धरा (जैसलमेर) में पहुंची, जहां माड़ राग की उत्पति हुई।

इसी धाट धरा के अमरकोट और नगर पारकर क्षेत्रों पर परमारवंशी राजपूतों की सोढ़ा शाखा का लम्बे समय तक शासन रहा, इसी कारण इस क्षेत्र को सोढाण भी कहा गया है। धाट और पारकर दोनों का समन्वित क्षेत्र सोढाण प्रदेश है। वीर प्रसूता सोढाण धरा धाट ने श्याम धर्म व क्षात्र धर्म की गरिमा को सदैव उज्ज्वल रखने हेतु अनेक वीरों, संतों और महात्माओं को जन्म देकर अतीत का इतिहास संजोया है। उन लोगों ने अपने अद्भुत साहस, अपूर्व शौर्य, बलिदान व अखण्ड तप तपस्या व परिलब्ध ज्ञान के उजाले से भ्रमित व अज्ञानी समाज को एक नवीन दिशा की आदर्श प्रेरणा देकर भव्य भक्ति की सुख्याति पाई है। सोढा राजपूतों की वीरता और दानवीरता जगजाहिर है। आज भी सोढाण धरा धाट में सोढा राजपूतों की अमरकीर्ति के परिचायक पात्र सोढा राणो, राणो मेहन्द्रो, राणो काछवो, राणो खींवरों के लोकगीत विशेष चाव से गाए जाते हैं।

इसी क्षेत्र के प्रसिद्ध किले रतेकोट पर बाहडमेर नगर के संस्थापक परमार राजा बाहडराय के पौत्र और राजा चाहड़राय के पुत्र सोढ़ा जी ने 1124 ई. में रता मुगल को मारकर अधिकार कर लिया था, सोढा जी के पौत्र राणा रायदे ने 1226 ई. में उमर सूमरा को पराजित कर अमरोकट किला जीता। कालान्तर में सोढा राजवंश में राणा दुर्जनसाल, राणा खींवरों, राणा अवतारदे, राणा हम्मीर जैसे प्रतापी शासकों द्वारा अमरकोट शासित रहा। शेरशाह सूरी द्वारा पराजित होकर दर-बदर भटक रहे मुगल बादशाह हुमायुं को 22 अगस्त 1542 ई. में अमरकोट में शरण देने वाला सोढा राणा वीसा (वीरसाल) ही था, जिसके राज प्रसाद में अकबर का जन्म हुआ था। तत्पश्चात् अमरकोट पर सोढा राजपूतों ने अपना वर्चस्व बनाए रखा। 1709 ई. में कल्होड़ा वंश के शासकों ने राणा ईश्वरदास जी से अमरकोट छीन लिया तथा कल्होडो को टालपुरो-मीरों ने चुनौती दी, तो कल्होडो के शासक मियां गुलाम अली ने मारवाड़ के शासक विजयसिंह (1752-1793) से सहायता मांगी, महाराजा विजयसिंह ने अमरकोट रियासत का क्षेत्र देने के बदले में सहायता देने की शर्त रखी, जिसे कोल्होडो मियां गुलामअली ने स्वीकार कर लिया। 04 फरवरी 1781 ई. के चौयारी (पाकिस्तान) के युद्ध में महाराजा विजयसिंह व मियां गुलाम अली की संयुक्त सेना ने टालपुरो-मीरों के नेता मीर बीजड़ तालपुरिया को पराजित किया। लेकिन मीर बीजड़ के पुत्रों अब्दुला व फतेह खां ने पुनः मुकाबला किया जो अन्त में 1783 ई. में पराजित हुए। संधि की शर्तानुसार मियां गुलामअली कल्होड़ा ने 1783 ई. में अमरकोट महाराजा विजयसिंह की राठौड़ सेना को सौंप दिया। महाराजा विजयसिंह ने लोढ़ा सोहामल को अमरकोट का सूबेदार नियुक्त किया। 1783 से 1813 ई. तक अमरकोट पर जोधपुर रियासत का अधिकार रहा।

1813 ई. में महाराजा मानसिंह की प्रशासनिक शिथिलताओं के कारण तालपुरियो (मीर) ने पुनः अमरकोट पर अधिकार कर लिया। 1843 ई. ब्रिटिश सेनापति चार्ल्स नेपियर द्वारा टालपुरो-मीरों को पराजित कर धाट क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। इस पर राणा मेहराजसिंह द्वितीय व अन्य सोढा जागीरदारों ने तिहरी गुलामी (जागीरदारी, महाराजा, अंग्रेज) के बदले में एकल शासन (सीधे अंग्रेज के अधीन) हेतु पोलिटिकल एजेन्ट ट्रिविट से पत्र व्यवहार किया। सोढ़ा राजपूतों ने प्रदेश पर उनके पुश्तैनी वर्चस्व को पोलिटिकल एजेन्ट ट्रिविट से आग्रह किया तो वह इस हेतु सहमत हो गया, परन्तु जो वह देने को तैयार था वह राणा मेहराजसिंह द्वितीय तथा सोढ़ा जागीरदार लेने को राजी नहीं हुए। इस पर अंग्रेजों ने धाट क्षेत्र में लगान वसूली का दमन चक्र चलाया तथा जबरन जनता से मनमानी कर वसूसी शुरू कर दी तथा उनके अत्याचार बढ़ते ही गए यही नहीं अंग्रेजों ने कर वसूली की इजारेदारी व लीज टालपुरो-मीरों, सैयदों को देना प्रारम्भ कर दिया जिन्होंने धाट क्षेत्र में अन्याय व अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया। कालान्तर में पोलिटिकल एजेन्ट ट्रिविट ने खेजड़ियाली (पाकिस्तान) के मुहम्मद अलीशाह सैयद को धाट क्षेत्र लीज पर दे दिया। जिसका धाट की जनता ने उग्र विरोध किया तो मुहम्मद अलीशाह ने विद्रोह का कड़ाई से दमन शुरू किया तथा सख्ती से निपटने हेतु जनता पर मनमाने कर लगा दिए। धाट की जनता ने राणा महाराजसिंह द्वितीय से सहायता की गुहार की परन्तु राणा अंग्रेजों के दबाव से जनता का खुलकर समर्थन नहीं कर सके। इस पर जनता ने रतनसिंह सोढ़ा से उन्हें राहत दिलाने हेतु निवेदन किया जिसे रतनसिंह सोढ़ा ने स्वीकार कर लिया और राणा रतनसिंह ने मुहम्मद अलीशाह सैयद को समझाया परन्तु वह नहीं माना तो दोनों के बीच बहस हुई और दोनों ने परस्पर युद्ध की चुनौती दी, हालांकि दोनों के बीच अली शाह सैयद द्वारा लगान की ऊंची बोली लगाने की बात को लेकर मामूली बहस हुई थी।

रतनसिंह तत्कालीन अमरकोट के राणा मेहराजसिंह द्वितीय का चचेरा भाई था। राणा खीमराजसिंह सुरताणोत के पुत्र विजयसिंह हुए जिनके पुत्र सूरजमल जी थे। सूरजमल जी का पोत्र अणदसिंह थे जिनके तीसरे पुत्र रतनसिंह हुए। राणा रतनसिंह का जन्म 19वीं शताब्दी के अमरकोट में हुआ था। रतन राणा बचपन से ही गर्वीला और वीर प्रकृति का व्यक्ति था। राणा रतन ने जनता की मदद हेतु अलीशाह सैयद और अंग्रेजों के दमन चक्र का विरोध किया तथा उन्हें करारा जवाब दिया। अंत में राणा रतनसिंह ने अपने साथी रामसर (पाकिस्तान) निवासी अपने सहयोगी भगूजी (संग्रासी सोढा) के साथ मिलकर मुहम्मद अलीशाह सैयद की गोली मारकर हत्या कर दी। रतन राणा के सहयोगी रहे भगूजी सोढा के वंशज नाथूसिंह सोढा के अनुसार रतनसिंह द्वारा मुहम्मद अली को गोली मारने के बाद भगूजी सोढा ने तलवार से उसका सिर काट डाला। मुहम्मद अली की हत्या के बाद रतन राणा को धाट की जनता ने राणा घोषित कर दिया। यद्यपि राणा रतनसिंह अमरकोट के राणा नहीं थे फिर भी धाट की जनता ने उन्हें सम्मान में राणा का लकब दिया भारत में अन्य किसी भी स्वतंत्रता सेनानी और देशभक्त के लिए जनता द्वारा ऐसे सम्मान का उदाहरण नहीं मिलता है। आखिर पोलिटिकल एजेन्ट ट्रिविट लीज समाप्त करने को विवश हुआ। अली की हत्या के बाद रतन राणा और उसके सहयोगी भगूजी सोढा फरार हो गए। अंग्रेजों ने उनका पता लगाने के भरसक प्रयत्न किए परन्तु जनता में उनकी लोकप्रियता होने के कारण किसी ने भी उनका पता नहीं बताया। जनता ने गुप्तरूप से राणा रतन को सहयोग व आश्रय दिया।

रतन राणा के सहयोगी भगूजी सोढा के वंशज नाथूसिंह सोढा ने साक्षात्कार के दौरान बताया कि अली की हत्या किसने की, यह काफी दिनों तक पता नहीं चला। बाद में परमार राजपूतों की वला शाखा के ओपियो वला नामक व्यक्ति ने रतनसिंह व भगूजी द्वारा मुहम्मद अली की हत्या की गुप्त जानकारी अंग्रेजों को दी। उसके बाद अंग्रेज सरकार व उसके जासूस राणा रतनसिंह के पीछे लग गए। राणा रतनसिंह व उसका साथी भगूजी सोढा फरारी के दौरान किस-किस के पास रहे, उन्हें किस-किसने आश्रय दिया इसकी तत्कालीन स्त्रोतों से प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती है, फिर भी वार्ताकारों के अनुसार लगभग 6 महीने तक वे धाट व सोढाण क्षेत्र के अलग-अलग स्थानों पर छिप कर रहे। नाथूसिंह सोढा के अनुसार इस दौरान राणा रतनसिंह ने जैसलमेर रियासत से शरण मांगी। परन्तु इस समय कोई भी शासक या जागीरदार अंग्रेजों से बेवजह झगड़ा मोल लेना नहीं चाहते थे, इसलिए किसी ने भी उनको शरण देने की हिम्मत नहीं दिखाई। इस दौरान राणा रतनसिंह व भगूजी कोटडा, सिवाणा, जालोर, माउंट आबू तथा अरावली के क्षेत्र में छिपकर रहे।

उधर अमरकोट की जनता ने राणा रतनसिंह द्वारा आततायी व अत्याचारी मुहम्मद अलीशाह सैयद से निजात दिलाने के कारण उसकी बाहदूरी व साहस की कहानियों से उसे लोकप्रिय बना दिया। राणा रतनसिंह की शूरवीरता, स्वतंत्रता प्रेम और बलिदान की गाथा के प्रेरणादायी लोकगीत आज भी सिन्ध, घाट, सोढाण और राजस्थान क्षेत्र में गाए जाते है। एक ऐसा ही गीत 'रतन राणो' इन क्षेत्रों में प्रचलित है।

म्हारा रतन राणा,
एकर तो अमराणें घुड़लो पाछो घेर
अमरराणं में बोले सूवा मोर,
हो जी हो म्हारा रतन राणा,
अमराणं में बोले सूवा मोर
बागां में बोले काली कोयलड़ी रे
म्हारा सायर सोढा एकर सूं
अमराणें घुड़लो घेर।।1।।

आखिरकार अंग्रेजों ने अपनी जासूसी और सैन्य शक्ति के बल पर राणा रतनसिंह व उसके साथी भगूजी सोढा को बघीबावळी क्षेत्र (यह स्थान बाड़मेर में है जहां पर अमरकोट जैसलमेर और जोधपुर तीनों रियासतों की सीमा मिलती है) से पकड़ लिया। ***छेवट अंग्रेजों दाम नीति सूं काम लियौ। अेक देसद्रोही अर विस्वासघाती नै धन रो लालच देय नै रतनसिंह नै पकड़ावण रौ कावतरौ घड़ीज्यौ। अंग्रेजां री दाम नीति काम आयगी अर राणौ पकड़ीजग्यौ।*** अंग्रेज उनकी आंखें बंद कर उन्हें अमरकोट ले गए जिसका वर्णन तेजसी भादू ने अपनी रचना 'सोढ़ा रा दूहा' में इस प्रकार किया है कि जब रतनसिंह को लेकर अमरकोट के लांबेसर तालाब के पास पहुंचे तब उन्होंने राणा से पूछा कि हम किस स्थान पर पहुंचे है? तो राणा ने उत्तर दिया -

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ एक का शेष)

संघ राजपूतों...

मैं सदैव आपकी ओर देखता रहता हूं, मेरा आपका निकट का संबंध है, यह अनुभूति आपको हो जाए तो बैठे नहीं रहोगे। मुझे लगता है आपका और मेरा जीवन एक रस हो गया है, आपकी स्मृति मेरी खुराक है। आप को न आने का हक है लेकिन मुझे आपको याद करने का हक है। अपनी क्षमताओं को बचा कर न रखना, भगवान आपकी आवश्यकता को जानता है, वह अवश्य पूरी करेगा क्यों कि आप अपनी क्षमताएं उसके काम में लगा रहे हो। शिविर में वागड़, मेवाड़, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, गुजरात, पाली आदि क्षेत्रों से दंपत्ति शामिल हुए। शिविरार्थियों को वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी का भी सपत्नीक सानिध्य मिला। 2 फरवरी को स्वामी जी के शिष्य अकेला महाराज से प्राप्त सत्संग में शिविरार्थियों के अलावा बाड़मेर शहर में रहने वाले स्वयंसेवक व समाज बंधु भी परिवार सहित शामिल हुए। सत्संग के बाद सभी ने भोजन प्रसादी भी ग्रहण की।

महत्व...

जनता की कामनाओं के कारण मंदिरों की आड़ में धंधे पनप गए। मंदिरों में जाने से जो मिलता है वह आपकी ही वस्तु आपको मिल रही है। वह आपकी स्वयं की ही आत्मिक संपत्ति है।

दंपित्त शिविर के दौरान 3 फरवरी को शिविरार्थियों को अपना आशीर्वाद देने पहुंच स्वामी अड़गड़ानंद जी के शिष्य अकेला महाराज ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि भगवान राम ने कहा है कि लोक और परलोक दोनों में निर्वाह के लिए उनकी भक्ति आवश्यक है। भक्ति से वही मिलता है जो आपके संयम से फलीभूत होता है। भजन से इस पूंजी का संग्रह होता है। आपके संयम में अपार शक्ति है, सब महापुरुषों की क्षमता आपमें समाहित है बस उस ओर बढ़ना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि प्रारम्भ में चिंतन में मैं सोचता था कि इस देश के विघटन के लिए ब्राह्मण दोषी हैं, फिर सोचता था कि क्षत्रिय दोषी हैं जिन्होंने ब्राह्मणों का अनुकरण किया लेकिन कालांतर में सोचता हूं कि भारत के सबसे बड़े शत्रु तथाकथित संत थे जिन्होंने अनेकता को बढ़ाया, एक ईश्वर से श्रद्धा को भटकाया। स्वामी जी ने कहा कि संघ में शक्ति है, ऐसा संघ बनाओ जो कभी न मिटे, अपना विस्तार कर परमेश्वर की सभी संतानों को गले लगाओ और उन्हें एक ईश्वर में श्रद्धा, उसके परिचायक नाम का जप एवं इंद्रियों के संयम का मार्ग बताओ।

(पृष्ठ छह का शेष)

धाट का प्रथम स्वतंत्रता सैनानी राणा रतनसिंह सोढ़ा

केहर लंकी गौरियां, सोढ़ा भंवर सुजांण।
वड झुकियां लांबैसरा अइयो धर सोढ़ांण।।

अंग्रेजों ने राणा रतनसिंह व उनके साथी भगूजी सोढ़ा पर ब्रिटिश हुकूमत व महारानी विक्टोरिया के खिलाफ राजद्रोह करने का मुकदमा चलाया और सुनवाई के बाद रतन राणा को मृत्युदण्ड की सजा और भगूजी सोढा को काले पानी की सजा सुनाई। राणा के खिलाफ न्यायालय में मुकदमा चला। शाहंशाह के विरुद्ध विद्रोह खड़ा करने का अभियोग उस पर लगाया गया और उसे फांसी पर चढ़ा दिया गया। धाट व सोढांण की जनता ने इसका पुरजोर विरोध किया तथा फैसले के खिलाफ बोम्बे प्रेसीडेन्सी के गवर्नर इन कॉउन्सिल के समक्ष अपील की गई। अपील स्वीकृत भी हो गई किन्तु ब्राह्मणों, कल्होड़ो और तत्कालीन राणा ने षड्यंत्र रचकर आदेश जारी किए जाने में विलम्ब करवा दिया और आदेश जनता के समक्ष जारी करने के कतिपय क्षणों बाद ही राणा रतनसिंह को 1866 ई. में सूली पर लटका दिया गया।

राणा रतनसिंह को फांसी की सजा देने के लिए अमरकोट किले के बीचो-बीच देहरी पर लाया गया और जब राणा से उनकी अन्तिम इच्छा के बारे में पूछा गया तो राणा ने एक ही इच्छा बताई और कहा कि 'मेरे हाथ खोल दो', हाथ खोलने पर राणा ने अपने हाथ चेहरे तक पर उठाए और मूछो के दोनों किनारों (छोर) को मरोड़ते हुए कहा कि 'अब वह तैयार है।' मूछों को मरोड़ना या ठीक करना धाट क्षेत्र के लोगों में बहादुरी और विजय का प्रतीक माना जाता है। यह दर्शाता है कि वे निडर व साहसी थे तथा यह उनके सर्वोच्च आत्म विश्वास का प्रतीक था। मृत्यु होने तक उसे फंदे पर लटकाया गया। उसका पार्थिव शरीर पूरे अमरकोट से देखा जा सकता था जैसा कि अंग्रेज लोग चाहते थे कि लोगों के दिलों में भय का एक उदाहरण बैठ जाए। राणा की घोड़ी देवनीक जिसने किले के प्रवेश द्वार पर इसकी शुरुआती प्रतिक्रिया को देख लिया था वह धड़ाम से गिर गई और उसकी मृत्यु हो गई। रतनसिंह की घोड़ी के पोड़ के निशान अमरकोट किले के मुख्य दरवाजे की दीवार पर आज भी दिखाई देते हैं। कहा जाता है कि राणा रतनसिंह की फांसी के स्थगन की सूचना एक ब्राह्मण जाति के डाकिये को मिल गई थी जिसने मीर अलीशाह सैयद के परिवार के दवाब व लालच में आकर सूचना समय पर नहीं दी। जब राणा रतनसिंह को फांसी के फंदे पर ले जाया चुका था तो उसी वक्त यह बात बताई गई परन्तु राणा रतनसिंह ने अब फांसी के फंदे से उतरने से मना कर दिया था। उसके बाद ब्राह्मणों का परिवार अमरकोट में पनप नहीं पाया और आज भी अमरकोट में ब्राह्मण नहीं रहते हैं। वर्तमान राणा परिवार थळ के चैलार गांव से ब्राह्मण को बुलाकर अपनी धार्मिक क्रियाकलाप सम्पन्न करवाते हैं।

नरपतदान आसिया वैतालिक ने राणा रतनसिंह के बारे में इस प्रकार दोहे का प्रयोग किया गया है :

रतन राण सोढांण, सूली चढ़ियौ देस हित।
गावै कीरत गान,
कण कण मरुथल काळिया।।

संग्रामसिंह सोढा सचियापुरा ने अपनी रचना 'सो धरती सोढांण' में राणा रतसिंह के बारे में इस प्रकार दोहे का प्रयोग किया है :

आजादी हित देस री, रतन हुवौ कुरबाण।
जोत जगाई जोर री, सो धरती सोढांण।।

राजस्थान के प्रसिद्ध कवि और लेखक डॉ. शक्तिदान कविया ने राणा रतनसिंह पर श्री रतन रांणै रा छंद नामक रचना लिखी है जिसमें इस प्रकार वर्णन मिलता है।

गूंजै जस गीतां गहर, अंजस सुत आणंद।
रंग सोढै रतनेस रा, चंवू सारसी छंद।।

अंग्रेजों के भय से इस पूरे प्रकरण में राणा रतनसिंह के चाचाओं ने भी रतनसिंह का साथ नहीं दिया। रतनसिंह के तीन पुत्र थे। मोहड़सिंह, रणजीतसिंह एवं जीवराजसिंह जिनमें मोहड़सिंह व रणजीतसिंह की निःसंतान ही मृत्यु हुई। तीसरे पुत्र जीवराजसिंह के दो पुत्र हुए भैरसिंह व सोनसिंह, जिन्होंने धाट क्षेत्र पर अपना वर्चस्व बनाए रखा तथा उन्हों पूर्णतया स्वप्रयासों से 2000 एकड सिंचित कृषि भूमि बिना किसी आवंटन व अनुदान के प्राप्त की और वडेली गांव की स्थापना की।

जीवराजसिंह धाट के बैच मजिस्ट्रेट भी रहे, उनके ज्येष्ठ पुत्र ठा. भैरसिंह जी गवर्नर के दरबारी और लोकल बोर्ड ऑफ अमरकोट के अधिष्ठाता रहे। ठाकुर भैरसिंह जी की छोटी पुत्री का विवाह जैसलमेर के महारावल गिरधरसिंह जी से हुआ था। भैरसिंह के पुत्र खुमाणसिंह के पृथ्वीसिंह और जैतमालसिंह हुए और सोनसिंह के पुत्र सवाईसिंह सिंध विधानसभा के लिए निर्वाचित हुए तथा जस्टिस ऑफ पीस भी रहे। बाद में यह परिवार राजनीतिक व सामाजिक उलझनों के कारण 1971 में भारत आ गया जो अभी जोधपुर में रहते है। भगूजी सोढा को काले पानी की सजा देकर अंडमान निकोबार निर्वासित किया गया वहीं उनकी मृत्यु हुई। इसके बाद उनके बारे में कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती। भगूजी सोढा के पुत्र थानसिंह ने गांव थाने का तला (पाकिस्तान) बसाया। भगूजी के वंशज भी जैसलमेर आ गए और मूलाना देवीकोट में बस गए। जहां भारत सरकार द्वारा उन्हें 1971 के युद्ध शरणार्थी के रूप में भूमि आवंटित हुई।

इस प्रकार धाट क्षेत्र भी विदेशी सत्ता के विरुद्ध आजादी की लड़ाई के लिए आगे आया और यहां के वाशिंदों ने इसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया। राणा रतनसिंह की अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई और उनकी शहादत अमर है तथा धाट क्षेत्र की आजादी की लड़ाई का अहम हिस्सा है।

सूर्य प्रकट हो गया

मृग कस्तूरी की सौगंधिक तृष्णा में भटक रहा था।
मनोहारी बिम्बों में,
मोह की मरिचिकाओं में।
खोजता सुख,
नर्म बांहों की रुमानियत में,
मखमली गद्दों के गुदाजपन में।
ययाति की लिप्सा निःशेष न हुई।
देव ने आमंत्रण भेजे,
अभागा विपरीत भागता रहा।
बंधु आये,
खैरखवाह आये।
वे बुलाते गए, मैं भागता रहा।
रूठे,
अधिकार जताया,
दिल न पसीजा।
फिर त्याग दिया,
स्वनिर्मित भंवरों में,
डूबने उतराने के लिए।
भटकन समाप्त ना हुई।।
आज फिर अभागे को आमंत्रण मिला।
'भिखारी से भगवान मिलना चाहते हैं।
अपने अंतर की आवाज सुनाना चाहते हैं।'
देव सन्मुख हो बोल पड़े।
उसके परस बिन पत्थर हो तुम!!
किसे खोज रहे हो?
वह तुम्हारे सम्मुख है,
तुम्हारी पीठ पर है,
छत्र तान रखा है उसने तुम पर!!!
फिर क्यों सकुचाते हो!!
क्या विराट रूप देखकर ही मानोगे!!
देव अंतर की व्यथा बताते रहे,
अभागा रोता रहा।
पाप अश्रु जल बनकर धुल गए।
सकल भेद मिट गए,
संकल्प दृढ़ हो गए,
संशय निर्मूल हो गए,
आसमान साफ हो गया,
सूर्य प्रकट हो गया।।

जब्बर सिंह भूरटिया

छात्रावास की बालिकाओं के बीच महिला अधिकारी

श्री दुर्गा महिला विकास संस्थान द्वारा संचालित पद्मिनी छात्रावास में छात्रावास की बालिकाओं से संवाद करने समाज की महिला अधिकारी पहुंची। पुलिस उपाधीक्षक के पद से त्याग पत्र देकर प्रोफेसर के रूप में सेवाएं दे रही डॉ. सीमा चौहान तथा महिला एवं बाल विकास विभाग में अतिरिक्त निदेशक प्रियंबिका पंवार ने 10 फरवरी को छात्रावास की बालिकाओं से संवाद कर उन्हें अपने अनुभव की जानकारी दी। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के साथ-साथ स्मार्ट स्टडी के तौर तरीके बताए। लगभग 4 घंटे बालिकाओं के बीच बीताए एवं बालिकाओं के साथ ही भोजन किया। छात्रावास की बालिकाओं ने उत्साह एवं उत्सुकता पूर्वक अपने प्रश्न पूछे एवं सार्थक संवाद किया। बालिकाओं के उत्साह एवं उत्सुकता से दोनों अधिकारी प्रभावित हुईं एवं बार-बार ऐसा संवाद करने के लिए और महिला अधिकारियों के साथ आने का वादा किया। साथ ही छात्रावास में उन्नत पुस्तकालय बनाने हेतु स्वयं की ओर से सक्रिय सहयोग का आश्वासन दिया।

सांचौर में प्रतिभा खोज परीक्षा

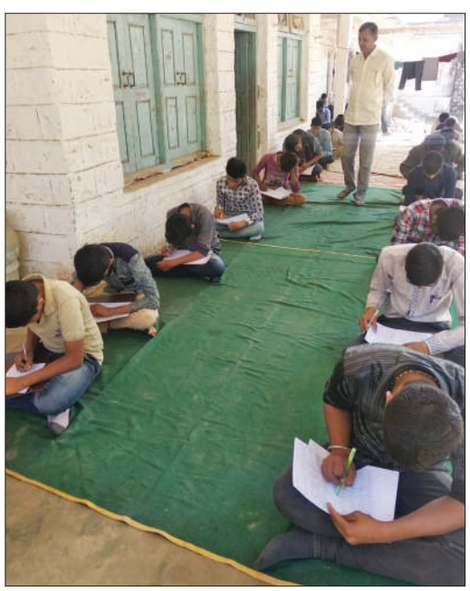

सांचौर के राव बल्लूजी राजपूत छात्रावास में 10 फरवरी को तहसील स्तरीय प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन किया गया। परीक्षा कनिष्ठ व वरिष्ठ दो वर्गों में आयोजित की गई। प्रथम वर्ग में कृष्णपालसिंह बावरला प्रथम, जगतपालसिंह गिरोला, प्रवीणसिंह डावल, किशनसिंह पुर द्वितीय व रणवीरसिंह डावल तृतीय रहे। द्वितीय वर्ग में भगवानसिंह सांगड़वा, ऋतुराजसिंह कारोला, सुखपालसिंह सुरावा, बाबूसिंह चारणीम प्रथम, पूजा कंवर बावरला द्वितीय व विपेन्द्रसिंह पुर, दानसिंह चौरा, प्रवीणसिंह झोटड़ा तृतीय रहे। परीक्षा आयोजन में छात्रावास प्रबंधन से जुड़े सभी समाज बंधुओं का सहयोग रहा। परीक्षा के बाद परीक्षार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं बाबत जानकारी दी गई।

पांचोटा मंदिर में 19वां प्रतिभा सम्मान समारोह

जालोर जिले की आहोर तहसील में पांचोटा गांव स्थित नागणेशी माता मंदिर में 19वां प्राण प्रतिष्ठा वार्षिक समारोह एवं सिंधल राठौड़ प्रतिभा सम्मान समारोह बसंत पंचमी के दिन 10 फरवरी को संपन्न हुआ। हेमशाही मठ कंवला के हरिपूरी महाराज एवं कोसलापुरा (भीनमाल) के दयानाथ जी के सानिध्य में संपन्न इस समारोह में पुलिस उपाधीक्षक जालोर अमरसिंह चांपावत मुख्य अतिथि एवं भाजपा जालोर के जिलाध्यक्ष रविन्द्रसिंह बालावत अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। समारोह के प्रारम्भ में मंदिर का शिखर ध्वज बदला गया एवं तदुपरांत प्रतिभावान विद्यार्थियों, नव नियुक्त कर्मचारियों, सेवानिवृत कर्मचारियों एवं समाजसेवियों को प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिह्न देकर सम्मान किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने

शिक्षा के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी बढ़-चढ़ कर भाग लेने का आह्वान किया एवं अभिभावकों से नाबालिग संतानों को वाहन नहीं सौंपने का आग्रह किया। समारोह अध्यक्ष ने शिक्षा को प्रोत्साहन देने एवं नशे से दूर होने की बात कही। मंदिर परिसर में संचालित विद्यालय हेतु घनश्यामसिंह महेशपुरा ने एक बस खरीदने के लिए 11 लाख रुपए देने की घोषणा की। अन्य सहयोगियों ने भी सहयोग राशि की घोषणा की। शिक्षा समिति के अध्यक्ष लालसिंह के सहयोग से निर्माणाधीन स्कूल भवन का भी सभी ने निरीक्षण किया। समारोह में भोजनादि की व्यवस्था रोडला के उमेशसिंह, नरेन्द्रसिंह, दलपतसिंह आदि के द्वारा की गई। संचालन परबतसिंह खिंदारागांव ने किया।

नीट पीजी में 78वीं रैंक

बाड़मेर जिले के जानसिंह की बेरी गांव के निवासी डॉ. भूरसिंह ने नीट पीजी 2019 में अखिल भारतीय स्तर पर 78वीं रैंक हासिल की है। आठवी तक गांव की स्कूल में पढ़े भूरसिंह ने 2018 में सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज जयपुर में एम.बी.बी.एस. किया था।

पूरणसिंह सचिव निर्वाचित

जोधपुर में ब्लु सिटी प्रेस क्लब का गठन किया गया है जिसमें संघ के स्वयंसेवक पूरणसिंह उखरड़ा को सर्वसम्मति से सचिव निर्वाचित किया गया है। अन्य पदाधिकारियों के साथ-साथ भवानीसिंह भाटी सहसचिव बने हैं।

गिराब के खिलाड़ियों को दो पदक

राजधानी दिल्ली में आयोजित 10 वीं राष्ट्रीय स्पीड बाल प्रतियोगिता में गिराब के भरतसिंह पुत्र शैतान सिंह ने रजत पदक व चुतर सिंह पुत्र गुलाब सिंह ने कांस्य पदक जीता है।

अजमेर में क्षत्रिय प्रतिभा सम्मान समारोह

अजमेर के जवाहर रंगमंच पर 20वां क्षत्रिय प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया जिसमें 122 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों एवं विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय सेवाएं देने वाले 23 व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। समारोह को परिवहन मंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास, उच्च शिक्षा मंत्री भंवरसिंह भाटी, अपर जिला न्यायाधीश शक्तिसिंह, पुलिस महानिरीक्षक वी.के. सिंह, आई.पी.एस. अमनसिंह, वरिष्ठ पत्रकार श्रीपालसिंह शक्तावत, पूर्व आई.पी.एस. बहादुरसिंह आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने छोटे-बड़े सभी कामों को निष्ठापूर्वक करने, सफल व्यक्तियों से प्रेरणा लेने, बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने, अपने समाज के साथ-साथ सबके लिए काम करने, आधुनिक तकनीक का उपयोग करने आदि विषयों पर अपनी बात कही।

राव चांपा जी की 606वीं जयंती मनाई

राठौड़ कुल की चांपावत खांप के आदि पुरुष राव चांपा जी की 606 वीं जयंती 9 फरवरी को विभिन्न स्थानों पर मनाई गई। राव चांपाजी ने मंडोर को सिसोदियों से छुड़वाने, कापरड़ा के युद्ध, विक्रम संवत् 1522 में महमूद खिलजी के साथ युद्ध में वीरता का प्रदर्शन किया था। विक्रम संवत् 1536 में सिंधलों के साथ युद्ध में वे वीरगति को प्राप्त हुए। चांपावत राठौड़ों के विभिन्न गांवों में इस दिन अपने पितृ पुरुष को याद किया गया। वाडिया चांपावतान में जयंती के उपरान्त संघ की शाखा लगाने का भी निर्णय किया गया।

कल्ला रायमलोत का बलिदान दिवस मनाया

अकबर की इच्छा को धत्ता बताते हुए बूंदी के हाड़ा शासक की इज्जत बचाने वाले वीरवर कल्ला रायमलोत का बलिदान दिवस 30 जनवरी को सिवाणा स्थित कल्ला रायमलोत सर्किल पर मनाया गया। हणवंतसिंह मवड़ी, हिन्दूसिंह सिणेर, गणपतसिंह गोलिया आदि ने उनके स्वाभिमानी जीवन एवं बलिदान से प्रेरणा लेने की बात कही। कार्यक्रम में सिवाणा शहर के युवा एवं वरिष्ठ नागरिक शामिल हुए। सिवाणा के किले में स्थित कल्ला जी की छतरी पर भी कार्यक्रम आयोजित किया गया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org